शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 जनवरी 2013

सम्पादकीय

शब्द–शक्ति की उपासना
विनोबा

समाजजीवन को बदलने और उस पर स्थायी असर डालने में उनके ही प्रयत्न सफल हुए हैं जिन्होंने या तो आध्यात्मिक तत्वों को स्थापित किया या विज्ञान की खोज की। विज्ञान का असर दुनिया पर हमेशा हुआ है और होता रहेगा। लोकजीवन पर असर डालने वाली एक तीसरी शक्ति साहित्य की है। यह विज्ञान और आत्मज्ञान को समन्वित कर लोगों के सामने समुचित शब्दों में व्यक्त करती है। इस तरह वैज्ञानिक, आध्यात्मिक खोज करने वाले और शब्द–शक्ति में नये–नये शब्द खोजकर लोगों के चिंतन के लिए जिन लोगों ने कुछ–न–कुछ दिया है, वे ही लोग दुनिया को आकार देंगे। इसलिए हमें साहित्य की शक्ति को पहचानना चाहिए। शब्द–शक्ति की अगर हम उपासना नहीं करेंगे, तो हम हार खायेंगे।

दुनिया को बनाने में तीन ताकतें ही काम करती हैं – (1) विज्ञान, (2) आत्मज्ञान और (3) साहित्य। जो बड़ी–बड़ी क्रांतियां हुईं, उसके पीछे विचारक और साहित्यिक थे, जिन्हें क्रांतदर्शन था।...सरस्वती यानी ब्रह्म–शक्ति है। वाणी ब्रह्मकी बराबरी करती है। इसलिए 'ब्रह्म' शब्द का अर्थ भी वाणी होता है। ऋग्वेद में वचन आया है कि ब्रह्म जितना व्यापक है, उतनी व्यापक वाणी भी है। यहां 'वाणी' शब्द का अर्थ केवल वह स्थूल वाणी नहीं है, जिसे हम बोलते हैं, बल्कि एक ब्रह्म–शक्ति है, जिसके आधार पर मनुष्य चिंतन करता है, चिंतन का प्रकाशन करता है और चिंतन का समझता भी है। यह वाक्–शक्ति साहित्य है। साहित्य से ब्रह्म–चिंतन और फिर ब्रह्म–प्रकाशन कर सकते हैं। उसके बिना ब्रह्म अप्रकाशित ही रह जाएगा।

चिंतन की एक शक्ति होती है, जो आत्मा की गहराई में जाकर विश्व की सूक्ष्मता में प्रवेश करके जीवन के सिद्धांतों का शोध करती है। इस चिंतन–शक्ति के अभाव में समाज लूला बन जाएगा, प्रगति रुक जायेगी। जो ब्रह्मर्षि होते हैं, वे संसार को जीवन के तत्वज्ञान का चिंतनात्मक सार देते हैं, जिसमें जीवन की समस्याओं का हल रहता है।

दूसरी शक्ति सेवा की होती है। ब्रह्मर्षियों द्वारा प्राप्त चिंतन के आधार पर समाज–सेवक लोकसेवा में रत रहते हैं, जिन्हें राजर्षि कहते हैं। ऐसे सेवा करने वाले सेवक न रहें, तो समाज का न केवल एक अंग ही क्षीण हो जायेगा, अपितु सारा समाज शुष्क हो जायेगा।

तीसरी शक्ति साहित्य की है। जिन विचारों का ज्ञानियों को अनुभव होता है और जो आत्मा की गहराई में सिद्ध हो चुके हैं, उन विचारों को चुने हुए शब्दों में, लोकवाणी में वे ज्ञानी प्रकट करते हैं। जिससे कि लोग उन्हें ग्रहण कर सकें। इसमें विचार को तो पहचानना पड़ता ही है, लेकिन उस विचार को वाणी का बाना पहनाना पड़ता है, वरना उचित शब्दों के अभाव में, प्रकाश के बजाय अप्रकाश भी हो सकता है। एक–एक शब्द के बारे में विवेक रखना पड़ता है, ताकि न न्यून भाव प्रकट हो, न अतिरिक्त भाव, न विपरीत भाव। यह तीसरी शक्ति – जनता के हृदयों तक विचार पहुंचाने की कुशलता की शक्ति जिनमें होती है, उन्हें देवर्षि' कहते हैं।

इस तरह साहित्यकारों को लोक–हृदय के अनुकूल परिपूर्ण शब्द प्रकट करने की कुशलता साधनी चाहिए। अर्थात् सम्यक्, मधुर और कुशल, तीनों तरह की वाणी बोलना एक महान साधना है। देवर्षि का लक्षण है – सबके लिए प्रेम से भरा हुआ दिल। सबके विचारों को परखने के लिए बुद्धि की तटस्थता, वाणी की निर्विकारता और अपने बारे में निरहंकारिता जरूरी है। मैं मानता हूं कि साहित्य की शक्ति परमेश्वर की शक्ति के बराबर होती है। मैंने यह धृष्टतापूर्ण वाक्य कहा है। ब्रह्मांड में जो है, उसे ईश्वर की शक्ति माना जाता है। ब्रह्मांड में जो है, वह सब तो साहित्यिकों की वाणी में आता ही है, परंतु ब्रह्मांड में नहीं है, वह भी साहित्यिक की वाणी में आता है। शश–श्रृंग ईश्वर की सृष्टि में नहीं है, परंतु साहित्यिकों की सृष्टि में है। आकाश–पुष्प को किसने देखा है ? परंतु साहित्यिक की सृष्टि में है। आकाश–गंगा भी आकाश में तो नहीं है, लेकिन साहित्यिकों की सृष्टि में है। साहित्यिक तो आकाश में, पाताल में और धरती पर गंगा की धारा देखते हैं। इस तरह वे गंगा की तीन–तीन धाराएं देखते हैं। लेकिन ईश्वर की सृष्टि में गंगा की एक ही धारा है, जो हिमालय से निकलती है और गंगासागर में लीन हो जाती है। इसलिए साहित्यिक के पास बहुत शक्ति पड़ी है।